

## लेखकीय

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू. जी. सी.) द्वारा जब से विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में प्रवक्ता पद पर नियुक्ति के लिए नैट की अनिवार्यता कर दी गयी है, तब से इसके परीक्षार्थियों की संख्या में अतिशय वृद्धि हुई है। हिन्दी विषय में एम. ए. करने के बाद विद्यार्थी का प्रथम उद्देश्य रहता है कि वह नैट परीक्षा उत्तीर्ण करे। हिन्दी विषय लेकर नैट परीक्षा में बैठने वालों के लिए प्रायः परीक्षाफल अनिश्चित-सा रहता है। इसका कारण समझे बिना वे बार-बार परीक्षा में बैठते रहते हैं, किन्तु सफलता तब भी उनसे दूर ही रहती है। नैट उनके लिए एक रहस्यमयी पहेली बनकर रह जाती है। उन्हें यह समझ नहीं आता है कि आखिर वे किस प्रकार तैयारी करें कि उन्हें सफलता मिल जाए?

इन सब बातों का विशद विश्लेषण करने पर यह बात प्रमुख रूप से उभर कर सामने आयी कि विद्यार्थियों के सामने सही मार्ग नहीं होता है। उनके सामने यह स्पष्ट नहीं होता है कि उनका लक्ष्य किस प्रकार व किस मार्ग पर चल कर प्राप्त होगा सबसे बड़ी बाधा होती है, उनका अकादमिक परीक्षा का अभ्यास। अकादमिक परीक्षाओं की तैयारी विद्यार्थी नुस्खेबाजी से करता है। वह पाँच-सात अथवा अधिकतम आठ-दस प्रश्नों को महत्वपूर्ण अथवा अति-महत्वपूर्ण मानकर रट लेता है। उन्हीं के बल पर विद्यार्थी अपनी अकादमिक परीक्षा उत्तीर्ण कर लेता है। उसे अपने विषय और उसके पाठ्यक्रम का गहराई से ज्ञान नहीं हो पाता है। गहराई से ज्ञान की बात तो जाने दें, उसे तो अपना सम्पूर्ण पाठ्यक्रम भी सम्भवतः ज्ञात नहीं होता है। इसी स्थिति में जब वह सीधे नैट में बैठता है तो नितान्त स्वाभाविक है कि सफलता उसे दर्शन न दे।

दूसरा प्रमुख कारण है—नैट परीक्षा के पाठ्यक्रम का विशाल स्वरूप। परीक्षार्थियों को समूचा पाठ्यक्रम इकट्ठा मिल नहीं पाता है। परिणाम यह होता है कि विद्यार्थी विभिन्न प्रकार की पुस्तकों की शरण में जाता है, किन्तु वे पुस्तकें पर्याप्त नहीं ठहरती हैं। सही मार्गदर्शन करने में सक्षम नहीं होती हैं। वे गाइडें, जोकि नैट के लिए बाजार में उपलब्ध हैं। वे नैट का नाम अवश्य लेती हैं, किन्तु दशा

उनकी अत्यन्त दयनीय है। विद्यार्थी-वर्ग के भविष्य के साथ ये गाइडें न्याय नहीं कर पाती हैं। प्रस्तुत पुस्तक इस न्यूनता को भरने का एक विनम्र प्रयास है। उद्देश्य है कि परीक्षार्थियों को समस्त पाठ्यक्रम को अपने कलेवर में समेटे एक सक्षम पुस्तक उपलब्ध करवायी जाए। इस पुस्तक में प्रश्न-पत्र : द्वितीय का विशाल पाठ्यक्रम समेटा एवं सहेजा गया है।

प्रश्न-पत्र : द्वितीय का स्वरूप वस्तुनिष्ठ है। प्रस्तुत पुस्तक में लगभग दो हजार वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है। यह मात्र प्रश्नों का थोक के भाव जमावड़ा नहीं है, अपितु अत्यन्त वैज्ञानिक व योजनाबद्ध ढंग से पाठ्यक्रम का समुचित समायोजन है। प्रश्न-पत्र : द्वितीय का प्रथम खण्ड 'हिन्दी भाषा और उसका विकास', द्वितीय खण्ड 'हिन्दी-साहित्य का इतिहास', तृतीय खण्ड 'हिन्दी-साहित्य की गद्य विधाएँ' तथा चतुर्थ खण्ड 'काव्यशास्त्र और आलोचना' है। दो हजार वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का निर्माण इन खण्डों के पाठ्यक्रमगत स्वरूप के विस्तार तथा महत्व के अनुरूप ही किया गया है। प्रश्न-निर्माण में पाठ्यक्रम के बिन्दु की सम्पूर्णता तथा महत्ता को ध्यान में रखा गया है। प्रत्येक खण्ड से पहले उसके पाठ्यक्रम के समस्त बिन्दुओं का समुचित रूप से परिचय भी प्रस्तुत किया गया है। उद्देश्य यह है कि परीक्षार्थी प्रश्न-जगत् में प्रविष्ट होने से पहले पाठ्यक्रम का भी पर्याप्त रूप से परिचय प्राप्त कर ले। प्रयास यह किया गया है कि परीक्षार्थी को किसी अन्य पुस्तक अथवा स्रोत का मुँह नहीं ताकना पड़े। प्रस्तुत पुस्तक के अन्त में अभ्यासार्थ तीन मॉडल प्रश्न-पत्र भी दिये गये हैं, जिससे कि परीक्षार्थी परीक्षा का पूर्वाभ्यास कर सके।

हिन्दी भाषा तथा साहित्य के क्षेत्र में ही नहीं, अपितु, अपने समग्र जीवन में मैं जितना भी तथा जैसा भी बन पाया हूँ, उसमें परमपिता परमात्मा की कृपा सर्वोपरि है। मुझे अपने जीवन में कदम-कदम पर ईश्वर का साथ मिला है। ईश्वर के उपरान्त मैं अपनी माताश्री का ऋणी हूँ और सदैव रहूँगा। अपनी माताश्री के आशीर्वाद ने सदैव कर्म-पथ की भीषणता के बीच मेरे सिर पर शीतल छाया प्रदान की

है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित इतने विशाल पाठ्यक्रम से सम्बन्धित समस्त कृतियाँ प्राप्त कर सकना एक अत्यन्त दुरूह कार्य था। मुझे इसमें मेरे मित्रों ने बहुत मदद की है। 'साँचे मीत' की परिभाषा में आने वाले ऐसे मित्रों का मैं हृदय की अतल गहराइयों से आभारी हूँ। ऐसे मित्रों में मैं प्रथमतः उल्लेख करना चाहूँगा सुयोग्य व्यक्तित्व के धनी डॉ. मनीष पुष्करणा का। इनके सहयोग के बिना मैं यह कार्य सम्भवतः इतनी सरलता से नहीं कर पाता। मैं अपने मित्र डॉ. परितोष आसोपा तथा जयकरण चारण का भी आभारी हूँ। मैं कृतज्ञ हूँ जयपुर निवासी अपनी मित्रद्वय रेणु शर्मा तथा अर्चना शर्मा का, जिनके सहयोग ने मेरे कार्य को सुगम बनाया।

इन मित्रों के अतिरिक्त मेरे कुछ शिष्यों ने भी मुझे बहुत सहयोग दिया। इनमें मैं सर्वप्रथम उल्लेख करना चाहूँगा संजय पुरोहित (जैसलमेर) का। विलक्षण प्रतिभा के धनी तथा अत्यन्त मधुर, विनम्र व आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी संजय का सहयोग किसी भी रूप में तथा किसी भी अंश में कदापि विस्मृत नहीं किया जा सकता। मेरा आशीर्वाद है कि वे बड़ी-बड़ी सफलताएँ प्राप्त करें। मेरे अन्य शिष्यों में मनोज कुमावत, राजेश पवार, श्रीमती कान्ता छाबा, शिवरतन दान चारण, अजय सिंह राठौड़ (विशाल) तथा शिव कुमार छीपा का सहयोग उल्लेखनीय है। ईश्वर इन्हें इनके लक्ष्य प्राप्ति में 'सफलता' प्रदान करे, यही कामना है।

इनके अतिरिक्त मैं पूज्य गुरुवर डॉ. वेद शर्मा, विभागाध्यक्ष (हिन्दी), ब.ज.सि. रामपुरिया जैन महाविद्यालय,

बीकानेर तथा क्षेत्रीय समन्वयक, म.द.स. विश्वविद्यालय, अजमेर का कृतज्ञ हूँ कि जिनकी प्रेरणा मेरा बहुत बड़ा सम्बल है। मैं श्री मेघराज रांकावत, विधि विभाग, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर का भी कृतज्ञ हूँ कि जिनका स्नेह व प्रेरणा सदैव मुझे उत्साहित करते रहते हैं। इनके जादुई व्यक्तित्व ने सदैव मेरा मार्गदर्शन किया है। मैं अपने मित्रद्वय—मलयवाहन गुप्त तथा पी. डी. स्वामी के स्नेह का भी ऋणी हूँ। वैसे तो मेरे समस्त परिजनों का प्रस्तुत पुस्तक के लेखन में गहन भावनात्मक सहयोग रहा है, तथापि मैं अपने भानजे कैलाश का सहयोग यहाँ उल्लेखित करना चाहूँगा। ईश्वर उसे सफलता की नित-नवीन ऊँचाइयाँ प्रदान करे।

जिन विद्वान् लेखकों की पुस्तकों को मैंने अपना साथी बनाया, उन सभी का नाम देना स्थानाभाव के कारण सम्भव नहीं है, किन्तु मैं उन सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहूँगा। आशा है कि यह पुस्तक न केवल नैट अपितु विभिन्न विश्वविद्यालयों में एम. ए. (हिन्दी) के लिए निर्धारित मौखिक परीक्षाओं, राज्यों द्वारा प्रादेशिक स्तर पर कॉलेज व्याख्याता (हिन्दी) पद के लिए ली जा रही पात्रता परीक्षाओं तथा उक्त पाठ्यक्रम सम्बन्धी विभिन्न परीक्षाओं के लिए भी उपयोगी रहेगी।

प्रस्तुत पुस्तक से विद्यार्थी-वर्ग अधिकाधिक लाभान्वित होगा, तभी इसकी सार्थकता सिद्ध हो पायेगी। पुस्तक की विशेषताओं एवं श्रेष्ठता का श्रेय विद्वजनों को है तथा कमियों के लिए मैं उत्तरदायी हूँ। सुधी पाठकों के सुझाव सदैव सिर माथे पर।

— डॉ. कुमार गणेश